

## मध्यकालीन भारत में आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा का समन्वय

डॉ. नीतिका\*

\*सह प्राध्यापक, वनस्पति विज्ञान विभाग, जी.एम.वी. रामपुर, सहारनपुर

ई-मेल: [nitikapc@gmail.com](mailto:nitikapc@gmail.com)

DOI: [doi.org/10.5281/zenodo.18199951](https://doi.org/10.5281/zenodo.18199951)

Accepted on: 20/12/2025

Published on: 10/01/2026

### सारांश:

मध्यकालीन भारत, लगभग 6वीं से 18वीं शताब्दी वह दौर था, जब आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा परंपराएँ एक गहरे सांस्कृतिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक संवाद के माध्यम से परस्पर समन्वित हुईं। इस अध्ययन में आयुर्वेद के त्रिदोष और पंचमहाभूत सिद्धांत तथा यूनानी चिकित्सा के चार रस, मिज्जाज और अखलात सिद्धांत के तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा यह दिखाया गया है कि दोनों प्रणालियाँ स्वास्थ्य को शरीर, मन और प्रकृति के संतुलन की समग्र अवस्था के रूप में परिभाषित करती हैं। मुगल काल में वैद्य और हकीमों के सहयोग से औषधीय पौधों, औषध निर्माण तकनीकों, अर्क, माजून, रोगण, क्वाथ, चूर्ण आदि और क्लीनिकल पद्धतियों का ऐसा संगम विकसित हुआ जिसने तिब्ब-ए-हिंदुस्तानी जैसी समेकित चिकित्सा परंपरा को जन्म दिया। शोध में दर्शाया गया है कि नीम, गिलोय, अश्वगंधा, त्रिफला, सर्पगंधा के साथ इसबगोल, कसनी, अफीम, जैतून जैसे पौधों के संयुक्त प्रयोग से औषध विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, कृषि और औषध व्यापार चारों क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव पड़ा। दारु, उश्ना, शिफा, बाग, ए.दवाखाना और अतरशाल जैसे संस्थानों के माध्यम से औषध निर्माण, मानकीकरण, आसवन तकनीक और व्यक्तिगत प्रकृति-मिज्जाज आधारित उपचार पद्धतियाँ विकसित हुईं जो वर्तमान AYUSH और विशेषतः आयुर्वेद-यूनानी समन्वित चिकित्सा की ऐतिहासिक नींव के रूप में उभरती हैं। निष्कर्षतः यह समन्वय केवल दो चिकित्सीय प्रणालियों का जोड़ नहीं है बल्कि ज्ञान, अनुभव और संस्कृति के ऐसे बहुस्तरीय संगम का उदाहरण है जिसने भारतीय चिकित्सा को समग्रता, बहुलता और वैज्ञानिकता की नई दिशा प्रदान की।

**मुख्य शब्द:** मध्यकालीन भारत, आयुर्वेद, यूनानी चिकित्सा, त्रिदोष सिद्धांत, चार रस सिद्धांत, मिज्जाज, पंच समग्र चिकित्सा, पंचमहाभूत, अखलात, औषधीय पौधे, वनस्पति समन्वय और हकीमय तिब्ब-ए-हिंदुस्तानी, औषध निर्माण।

### प्रस्तावना:

भारत में 6वीं से 18वीं शताब्दी तक फैले मध्यकालीन युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय प्रगति देखी गई। आयुर्वेद की उपचार परंपराएँ विकसित और अधिक व्यवस्थित हो गईं। इसी काल में मुगलों के आगमन से एक

सांस्कृतिक समामेलन हुआ, जिससे भारत-इस्लामिक कला और वास्तुकला के विकास को बढ़ावा मिला। मध्यकालीन भारत में कृषि, व्यापार और शिल्पकला प्राथमिक आर्थिक गतिविधियाँ थीं।<sup>1</sup> मध्यकालीन भारत (लगभग छठी से अठारहवीं शताब्दी) में आयुर्वेद का विकास जारी रहा, हालांकि इस दौरान अन्य चिकित्सा प्रणालियों जैसे यूनानी और अरब चिकित्सा का प्रभाव भी बढ़ा। आयुर्वेदीय ज्ञान को पहले के सदियों के ग्रंथों और विद्वानों द्वारा संरक्षित और संवर्धित किया गया था, और चिकित्सा के अभ्यास में इसका अभिन्न भूमिका बनी रही। इस काल में ज्ञान के आदान-प्रदान से भारतीय और यूनानी-अरबी चिकित्सा के बीच संश्लेषण हुआ, और आयुर्वेद ने स्वास्थ्य के लिए शारीरिक संतुलन के संतुलन के समग्र दृष्टिकोण को बनाए रखा। इस काल में चिकित्सा विज्ञान ने भी एक नए आयाम को प्राप्त किया - विशेषकर तब, जब भारतीय आयुर्वेदिक परंपरा और पश्चिम एशिया से आई यूनानी चिकित्सा पद्धति का अभूतपूर्व संगम हुआ। भारत में इस्लामी शासन की स्थापना के साथ ही पश्चिम एशिया से अनेक विद्वान, चिकित्सक, दार्शनिक और वैज्ञानिक भारत आए। उन्होंने अपने साथ यूनानी चिकित्सा ग्रंथ, औषध निर्माण तकनीकें, और औषधीय पौधों के बीज लाए। इस संपर्क से भारतीय चिकित्सा प्रणाली में एक प्रकार का सांस्कृतिक और बौद्धिक आदान-प्रदान आरंभ हुआ।

### आयुर्वेद और यूनानी पद्धति का चिकित्सकीय समन्वय:

आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा का सबसे गहरा संगम उनके दार्शनिक दृष्टिकोण में दिखाई देता है। दोनों प्रणालियाँ केवल शरीर की बीमारियों का उपचार नहीं करतीं, बल्कि “स्वास्थ्य” को शरीर, मन और प्रकृति के संतुलन की अवस्था मानती हैं।

### आयुर्वेद का आधार:

आयुर्वेद का मानना है कि संपूर्ण ब्रह्मांड पाँच तत्वों से बना है: वायु (वायु), जल (जल), आकाश (अंतरिक्ष या ईथर), पृथ्वी (पृथ्वी) और तेज (अग्नि)। ये पाँच तत्व (जिन्हें आयुर्वेद में पंच महाभूत कहा जाता है) विभिन्न संयोजनों में मानव शरीर के तीन मूल द्रव्यों का निर्माण करते हैं। ये तीन द्रव्य: वात दोष, पित्त दोष और कफ दोष को सामूहिक रूप से "त्रिदोष" कहा जाता है और ये शरीर के मूल शारीरिक कार्यों को नियंत्रित करते हैं। साथ ही प्रत्येक प्रमुख दोष के लिए पाँच उप-दोष भी होते हैं। आयुर्वेद का मानना है कि मानव शरीर में सप्तधातुएँ (सात ऊतक) रस (ऊतक द्रव), मेद (वसा और संयोजी ऊतक), रक्त (रक्त), अस्थि (हड्डियाँ), मज्जा (मज्जा), मांस (मांसपेशी), और शुक्र (वीर्य) और शरीर के तीन मल (अपशिष्ट उत्पाद) होते हैं, अर्थात् पुरीष (मल), मूत्र (मूत्र) और स्वेद (पसीना)। आयुर्वेद का मूल सिद्धांत त्रिदोष सिद्धांत है - वात, पित्त और कफ का संतुलन ही स्वास्थ्य है।<sup>2</sup> यह सिद्धांत पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) पर आधारित है, जो शरीर के सभी अंगों और कार्यों को नियंत्रित करते हैं। वात दोष कोशिकीय परिवहन, इलेक्ट्रोलाइट संतुलन और अपशिष्ट पदार्थों के निष्कासन को बनाए रखता है और शुष्कता से इसका प्रभाव बढ़ जाता है। पित्त दोष शरीर के तापमान, दृष्टि तंत्रिका

समन्वय और भूख-प्यास प्रबंधन को नियंत्रित करता है। शरीर की गर्मी पित्त को बढ़ा देती है। मीठे और वसायुक्त भोजन से कफ दोष बढ़ता है और यह जोड़ों को सुचारू रूप से कार्य करने के लिए चिकनाई प्रदान करता है। माना जाता है कि शरीर का अपचय वात द्वारा, चयापचय पित्त द्वारा और उपचय कफ द्वारा नियंत्रित होता है।<sup>6</sup> स्वस्थ स्वास्थ्य के लिए, तीनों दोषों और अन्य कारकों के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। जब यह संतुलन भंग होता है, तब रोग उत्पन्न होता है।<sup>2,3</sup> चरक संहिता में कहा गया है -

**“वातपित्तकफानां सम्यक् अवस्थितिः स्वास्थ्यं, विकृतिः तु रोगः।”**

इसके अनुसार रोग केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक और आत्मिक असंतुलन का भी परिणाम होता है स्वास्थ्य का अर्थ इन रसों का संतुलन है, और रोग इन रसों के असंतुलन से उत्पन्न होता है।<sup>15</sup>

**यूनानी चिकित्सा पद्धति का आधार:**

यूनानी चिकित्सा पद्धति के अनुसार, मानव शरीर का स्वास्थ्य यूनानी सिद्धांतों के साथ-साथ मूलभूत शारीरिक सिद्धांतों की सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था द्वारा बनाए रखा जाता है। इन सिद्धांतों में -

1. अरकान या तत्व, 2. मिजाज या स्वभाव, 3. अखलत या शारीरिक दोष, 4. अंग और प्रणालियाँ, 5. अरवाह या महत्वपूर्ण आत्मा, 6. संकाय या शक्तियाँ और 7. अफाल या कार्य शामिल हैं। ये प्राकृतिक घटक एक-दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करके मानव शरीर की प्राकृतिक संरचना में संतुलन बनाए रखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में एक स्व-नियमन क्षमता होती है जिसे तबियत कहा जाता है जो या सात घटकों को संतुलन में रखने के लिए कहा जाता है।<sup>4</sup>

यूनानी चिकित्सा “चार रस सिद्धांत” (Humoral Theory) पर आधारित है —

1. दम (Blood) — जीवन का स्रोत
2. बलगम (Phlegm) — ठंडक और स्थिरता का प्रतीक
3. सफ़रा (Yellow bile) — ऊष्मा और ऊर्जा का प्रतीक
4. सौदा (Black bile) — ठहराव और स्थायित्व का प्रतिनिधि

स्वास्थ्य का अर्थ इन रसों का संतुलन है, और रोग इन रसों के असंतुलन से उत्पन्न होता है।<sup>5</sup>

हिप्पोक्रेट्स और गालेन के सिद्धांतों को अरब विद्वानों ने परिष्कृत कर “मिजाज सिद्धांत” का रूप दिया — जिसमें व्यक्ति की प्रकृति (temperament) उसके स्वास्थ्य का निर्धारण करती है।<sup>9, 11</sup>

**आयुर्वेद एवं यूनानी चिकित्सा पद्धति में वैचारिक समानता एवं सामंजस्य:**

मध्यकालीन भारत में विद्वानों ने इन दोनों सिद्धांतों में आश्चर्यजनक निम्नसमानताएँ पहचानीं

1. आयुर्वेद का त्रिदोष और यूनानी का चार रस दोनों शरीर के जैव-संतुलन पर केंद्रित हैं।
  2. आयुर्वेद की “प्रकृति” और यूनानी का “मिज़ाज” समान अवधारणाएँ हैं। दोनों व्यक्ति-विशेष की शारीरिक प्रवृत्ति को दर्शाती हैं।
  3. दोनों में आहार, जलवायु, ऋतु और जीवनशैली को स्वास्थ्य का मुख्य निर्धारक माना गया है।
  4. दोनों प्रणालियों में प्राकृतिक औषधियों विशेषतः पौधों, धातुओं, खनिजों और रत्नों का प्रयोग महत्वपूर्ण माना गया।
- आयुर्वेद का त्रिदोष सिद्धांत और यूनानी चिकित्सा का चार रस सिद्धांत दोनों ही शरीर में संतुलन को स्वास्थ्य का आधार मानते हैं।<sup>8,9</sup> दोनों पद्धतियों में आहार, जलवायु और जीवनशैली का महत्व समान रूप से स्वीकार किया गया है।<sup>12, 14</sup> मुगल चिकित्सकों ने आयुर्वेदिक प्रकृति और यूनानी मिज़ाज के बीच समानता को पहचाना और इसे रोग निदान का आधार बनाया।<sup>11, 13</sup>

### औषधीय पौधों का उपयोग और वनस्पति समन्वय:

भारत की भूमि सदियों से औषधीय पौधों की समृद्ध परंपरा का केंद्र रही है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे प्राचीन ग्रंथों में लगभग 700 से अधिक औषधीय पौधों का वर्णन मिलता है। मध्यकालीन भारत में जब यूनानी चिकित्सा प्रणाली अरब और फारस के माध्यम से भारत पहुँची, तब इसने भारतीय वनस्पति ज्ञान के साथ गहराई से संवाद किया। इस संवाद ने न केवल चिकित्सा विज्ञान को समृद्ध किया, बल्कि वनस्पति विज्ञान, औषध निर्माण और कृषि को भी नई दिशा दी।

मध्यकालीन भारत में चिकित्सा और वनस्पति का घनिष्ठ संबंध था। मुगल सम्राटों ने औषधीय पौधों के संरक्षण और अध्ययन के लिए अनेक बाग़-ए-दवाखाने (Herbal Gardens) स्थापित किए।

अकबर ने फतेहपुर सीकरी और आगरा में ऐसे औषधीय उद्यानों की स्थापना की, जहाँ भारतीय जड़ी-बूटियों जैसे नीम, तुलसी, गिलोय के साथ-साथ फारसी औषधियाँ जैसे कसनी, अफीम, इसबगोल भी उगाई जाती थीं। जहांगीर और शाहजहाँ ने कश्मीर, दिल्ली और लाहौर के उद्यानों में गुलाब, केसर, चंदन और अन्य सुगंधित पौधों की खेती कराई। इन उद्यानों में वैद्य और हकीम मिलकर औषधीय पौधों का परीक्षण, अर्क-निर्माण और नुस्खे तैयार करते थे। इन बाग़ानों ने “वनस्पति प्रयोगशालाओं” का रूप ले लिया, जहाँ औषध विज्ञान और वनस्पति विज्ञान का व्यावहारिक संगम हुआ।

### औषधीय पौधों का वर्गीकरण और उपयोग:

आयुर्वेद और यूनानी दोनों पद्धतियाँ पौधों को उनकी औषधीय क्रिया, स्वाद, गुणधर्म, तापीय प्रभाव और रोगनाशक क्षमता के आधार पर वर्गीकृत करती थीं।

- आयुर्वेद में पौधों का वर्गीकरण रस (स्वाद), गुण (गुणधर्म), वीर्य (ऊष्मा/शीत) और विपाक (पाचनोत्तर प्रभाव) पर आधारित था।
- यूनानी चिकित्सा पौधों का अध्ययन मिज़ाज (Temperament) — गर्म, ठंडा, तर, खुश्क के आधार पर करती थी।

इस समन्वय से पौधों के औषधीय गुणों की व्याख्या और प्रयोग का दायरा बढ़ गया।

#### सामान्य रूप से प्रयुक्त औषधीय पौधे (Commonly Used Medicinal Plants)

क्रम सं०	पौधे का नाम	आयुर्वेदिक उपयोग	यूनानी उपयोग
1	नीम (Azadirachta indica)	रक्तशुद्धि, त्वचा रोग, ज्वर	संक्रमणरोधी, घाव, ज्वर <sup>8,9,11</sup>
2	गिलोय (Tinospora cordifolia)	प्रतिरक्षा, यकृत रोग, बुखार	ज्वर, थकान, टायफाइड <sup>8,10,11</sup>
3	अश्वगंधा (Withania somnifera)	बलवर्धक, मानसिक रोग	नसों की कमजोरी, तनाव <sup>8,11,14</sup>
4	हरितकी (Terminalia chebula)	पाचन, दीर्घायु	शुद्धिकारक, कब्ज <sup>8,10</sup>
5	आंवला (Emblica officinalis)	रोग प्रतिरोधक	नेत्र रोग, रक्तशुद्धि, पाचन <sup>8,11,14</sup>
6	हल्दी (Curcuma longa)	सूजनरोधी, त्वचा रोग	घाव, संक्रमण, एंटीसेप्टिक <sup>8,11,12</sup>
7	चिरायता (Swertia chirata)	ज्वर, यकृत रोग	बुखार, पेट दर्द <sup>8,10,11</sup>
8	तुलसी (Ocimum sanctum)	सर्दी, खांसी, प्रतिरक्षा	श्वसन संक्रमण, ज्वर <sup>8,14</sup>
9	मेथी (Trigonella foenum-graecum)	मधुमेह, गठिया	हृदय, पाचन सुधारक <sup>11,12</sup>
10	भृंगराज (Eclipta alba)	यकृत, बालों के रोग	सिरदर्द, बाल झड़ना <sup>8,10</sup>

#### दुर्लभ और विशिष्ट औषधीय पौधे (Specialized or Rare Medicinal Plants)

क्रम सं०	पौधे का नाम	उपयोग (दोनों प्रणालियों में)
1	सर्पगंधा (Rauvolfia serpentina)	उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, मानसिक रोग <sup>8,10,11</sup>

2	वचा (Acorus calamus)	स्मृति वृद्धि, मस्तिष्क टॉनिक <sup>8,14</sup>
3	कुटकी (Picrorhiza kurroa)	यकृत टॉनिक, पीलिया <sup>8,11</sup>
4	गुग्गुलु (Commiphora mukul)	गठिया, सूजन, मोटापा <sup>11,12</sup>
5	विदंग (Embelia ribes)	कृमिनाशक, पेट विकार <sup>8,11</sup>
6	मुलेठी (Glycyrrhiza glabra)	गले की खराश, दमा <sup>9,10,11</sup>
7	त्रिफला (Haritaki, Bibhitaki, Amalaki)	पाचन, डिटॉक्सिफिकेशन <sup>8,10</sup>
8	अरंडी (Ricinus communis)	विरेचक, दर्द निवारक <sup>8,12</sup>
9	शंखपुष्पी (Convolvulus pluricaulis)	स्मृति वर्धक, चिंता निवारक <sup>8,14</sup>
10	अपामार्ग (Achyranthes aspera)	मूत्र विकार, सूजन, ज्वर <sup>8,11</sup>

### सुगंधित एवं औषध-सुगंध पौधे (Aromatic and Therapeutic Herbs)

मध्यकालीन भारत के दरबारों में सुगंध और औषध दोनों का अद्भुत मेल दिखाई देता है। इत्र, गुलकंद, रोगण और अर्क बनाने में कई पौधों का उपयोग औषधीय उद्देश्य से भी किया जाता था।

क्रम सं०	पौधा	उपयोग
1	गुलाब (Rosa damascena)	हृदय शांति, त्वचा रोग, गुलकंद <sup>10,11,13</sup>
2	चंदन (Santalum album)	शीतलता, त्वचा, मानसिक शांति <sup>8,10,14</sup>
3	केसर (Crocus sativus)	रक्तवर्धक, मूड एन्हांसर <sup>10,11,12</sup>
4	दालचीनी (Cinnamomum zeylanicum)	पाचन, रक्तचाप नियंत्रण <sup>8,11,12</sup>
5	इलायची (Elettaria cardamomum)	पाचन, श्वसन रोग <sup>8,11</sup>
6	कपूर (Cinnamomum camphora)	श्वसन रोग, सिरदर्द <sup>8,10</sup>
7	खस (Vetiveria zizanioides)	शीतलता, सुगंध, जल शुद्धि <sup>8,11,12</sup>
8	केवड़ा (Pandanus odorifer)	इत्र, मूत्रशोधक <sup>10,11,13</sup>
9	अदरक (Zingiber officinale)	सर्दी, पाचन, गैस <sup>8,10,11</sup>

10	लेमनग्रास (Cymbopogon citratus)	तनाव, ज्वर, सुगंध उपचार <sup>12,13</sup>
----	---------------------------------	------------------------------------------

### विदेशी पौधे और यूनानी प्रभाव (Foreign Plants and Unani Influence)

यूनानी चिकित्सा के साथ कुछ विदेशी पौधे भारत में पहली बार परिचित हुए। इन्हें भारतीय जलवायु में अनुकूल बनाकर स्थानीय उपयोग के लिए विकसित किया गया।

क्र० सं०	पौधा	मूल स्थान	उपयोग
1	अफीम (Papaver somniferum)	अरब / ईरान	दर्द निवारक, निद्राजनक <sup>9,11,12</sup>
2	इसबगोल (Plantago ovata)	ईरान	कब्ज, आंतों की सफाई <sup>11,12,13</sup>
3	कसनी (Cichorium intybus)	फारस	यकृत टॉनिक, रक्त शुद्धि <sup>9,12,13</sup>
4	जुफा (Hyssopus officinalis)	अरब	दमा, खांसी <sup>9,11</sup>
5	अंजीर (Ficus carica)	भूमध्य सागर क्षेत्र	पाचन, कब्ज <sup>10,11,12</sup>
6	खजूर (Phoenix dactylifera)	अरब	पोषक, ऊर्जा स्रोत <sup>11,12</sup>
7	बादाम (Prunus amygdalus)	अफगानिस्तान	मस्तिष्क पोषक, त्वचा <sup>9,11,13</sup>
8	जैतून (Olea europaea)	पश्चिम एशिया	हृदय, त्वचा, इत्र तेल <sup>9,10,11</sup>

इन पौधों का प्रयोग यूनानी औषध निर्माण जैसे माजून, लौह, रोगण, और अर्क में किया जाने लगा। इससे भारत की औषध निर्माण प्रणाली अधिक विविध और प्रभावशाली बनी।

### वनस्पति समन्वय का वैज्ञानिक प्रभाव (Scientific and Cultural Impact of Botanical Integration)

1. औषध विज्ञान का विस्तार:

दोनों प्रणालियों के एकीकरण से औषधियों की संख्या और उनके प्रयोग-क्षेत्र का विस्तार हुआ।

2. परीक्षण और प्रयोगशाला संस्कृति का विकास:

औषध निर्माण में आसवन (distillation), शोधन, मिश्रण, और रसायन-प्रयोग विकसित हुए।

3. व्यापार और कृषि पर प्रभाव:

औषधीय पौधों की खेती एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि बन गई — गुजरात, मलाबार, और बंगाल के तटीय क्षेत्रों में इसका विस्तार हुआ।

#### 4. सांस्कृतिक आदान-प्रदान:

यूनानी “हकीम” और भारतीय “वैद्य” का ज्ञान एक-दूसरे में घुल-मिल गया। परिणामस्वरूप “तिब्ब-ए-हिंदुस्तानी” की परंपरा बनी, जिसे बाद में ब्रिटिश काल में “Indo-Persian Medical Tradition” कहा गया।

### औषध निर्माण और चिकित्सा पद्धतियाँ (Pharmaceutical and Therapeutic Practices)

मध्यकालीन भारत में औषध निर्माण (Pharmacy) और चिकित्सा पद्धतियाँ (Therapeutics) अत्यंत विकसित अवस्था में थीं। यह काल आयुर्वेदिक और यूनानी दोनों परंपराओं के सहयोग, प्रयोग और नवाचार का साक्षी रहा। औषध निर्माण केवल अनुभवजन्य विधि नहीं रही, बल्कि यह वैज्ञानिक, व्यवस्थित और नियंत्रित प्रक्रिया बन चुकी थी।

जहाँ आयुर्वेदिक वैद्य प्राकृतिक औषधियों के शोधन, सत्व निष्कर्षण और रस-रसायन पर बल देते थे, वहीं यूनानी चिकित्सक आसवन (distillation), गलन (fusion) और अर्क निर्माण की तकनीकों में दक्ष थे। दोनों प्रणालियों के सम्मिलन से एक नई औषध विज्ञान संस्कृति का निर्माण हुआ।

### औषध निर्माण के सिद्धांत (Principles of Drug Formulation)

दोनों पद्धतियों में औषध निर्माण का लक्ष्य समान था –

“प्राकृतिक द्रव्यों के गुणों को अधिकतम चिकित्सीय प्रभाव में परिवर्तित करना”

आयुर्वेदिक दृष्टि से, दवा निर्माण, रस, गुण, वीर्य, विपाक तथा प्रभाव के संतुलन पर आधारित था और यूनानी दृष्टि से, औषध का प्रभाव उसके मिजाज (temperament) गर्म, ठंडा, तर या खुश्क पर निर्भर करता था। इस समन्वय से औषधियों के मिश्रण और निर्माण में नई संभावनाएँ खुलीं।

### औषध निर्माण की प्रमुख विधियाँ (Major Methods of Preparation)

क्रम सं०	प्रकार	विवरण	प्रयोग दोनों प्रणालियों में
1	अर्क (Distillates)	अर्क (Distillates)	गुलाबजल, केवड़ा अर्क, अर्क-ए-गुल
2	माजून (Confection)	माजून (Confection)	माजून-ए-फलसफा, माजून-ए-दीनी



3	रोगण (Medicated Oils)	रोगण (Medicated Oils)	रोगण-ए-बादाम, रोगण-ए-कर्पूर
4	क्वाथ / काढ़ा (Decoction)	क्वाथ / काढ़ा (Decoction)	सर्पगंधा क्वाथ, गिलोय क्वाथ
5	चूर्ण (Powder Form)	चूर्ण (Powder Form)	त्रिफला चूर्ण, विदंग चूर्ण
6	लेह / अवलेह (Linctus)	लेह / अवलेह (Linctus)	च्यवनप्राश, खमीरा गोजवान
7	हब्ब (Tablets / Pills)	हब्ब (Tablets / Pills)	हब्ब-ए-जवाहर, हब्ब-ए-खुश्क
8	कुहू / सुहागा (Eye / Topical Applications)	कुहू / सुहागा (Eye / Topical Applications)	कज्जल, मरहम-ए-रुहान

### चिकित्सा प्रणाली और उपचार पद्धति (Therapeutic System and Clinical Practice):

मध्यकालीन चिकित्सक उपचार को केवल औषधि तक सीमित नहीं रखते थे, बल्कि वे रोगी के जीवन-आचार, आहार, जलवायु और मानसिक स्थिति को भी उपचार का भाग मानते थे।

आयुर्वेदिक सिद्धांत – “त्रिसूत्र” (Hetu, Linga, Aushadha):

1. Hetu (कारण) — रोग का कारण खोजा जाता था।
2. Linga (लक्षण) — रोग के लक्षणों का विश्लेषण।
3. Aushadha (उपचार) — औषध, आहार और दिनचर्या द्वारा संतुलन स्थापित करना।

यूनानी सिद्धांत – “इलाज-बिल-दवाइयां” और “इलाज-बिल-गिजा”:

1. Ilaj bil Dawa (औषधि से उपचार)
2. Ilaj bil Ghiza (आहार से उपचार)
3. Ilaj bil Tadbir (नियमित जीवनशैली द्वारा उपचार)

इन सिद्धांतों के मेल से “समग्र चिकित्सा दृष्टि” (Holistic Therapy) का विकास हुआ।

मध्यकालीन भारत के शासन में चिकित्सा संस्थानों का विशेष स्थान था। “दार-उश-शिफा” (राजकीय अस्पताल) - जहाँ वैद्य और हकीम दोनों कार्यरत थे। “बैत-उल-हिकमत (House of Wisdom) - जहाँ औषध निर्माण और अनुवाद कार्य होता था और दिल्ली, लाहौर, जौनपुर, आगरा, बीजापुर और गोलकुंडा चिकित्सा शिक्षा के प्रमुख केंद्र बने। चिकित्सा संस्थानों में औषधि, आहार और स्वच्छता — तीनों का विशेष ध्यान रखा जाता था। इन संस्थानों में रोगियों के लिए मुफ्त उपचार और औषध वितरण होता था — जो भारतीय चिकित्सा परंपरा के मानवीय मूल्यों को दर्शाता है। मध्यकाल में औषध

निर्माण केंद्र अत्यंत संगठित थे। अल-हकीम मोहम्मद शरीफ खान और हकीम अली गिलानी जैसे चिकित्सक प्रयोगशालाएँ चलाते थे। आसवन (distillation) के लिए कूड़ा, अलंबिक, और कुंड जैसे उपकरण प्रयोग में लाए जाते थे। औषधियों को संग्रहित करने हेतु मिट्टी या कांसे के गढ़े और शीशियाँ रखी जाती थीं। औषधीय अर्क तैयार करने में “गुलाब अर्कशाला” और “अतरशाला” का प्रयोग होता था। यह तकनीकी विकास बाद में यूरोपीय बोटैनिकल प्रयोगशालाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बना।

### **औषध व्यापार और आर्थिक प्रभाव (Medicinal Trade and Economic Impact)**

मध्यकालीन भारत में औषधीय पौधों का व्यापार चिकित्सा से जुड़ी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग बन गया था। उस दौरान मलाबार, गुजरात, और बंगाल औषधीय पौधों के निर्यात केंद्र थे। अरब व्यापारी केसर, इलायची, नीम, हल्दी, चिरायता जैसी भारतीय औषधियाँ पश्चिम एशिया ले जाते थे और अपने साथ अफीम, इसबगोल, कसनी, बादाम जैसी औषधियाँ भारत लाते थे। इस व्यापारिक आदान-प्रदान ने चिकित्सा को एक “आर्थिक संस्थान” का रूप दे दिया, जो लोकजीवन और दरबारी अर्थव्यवस्था दोनों में समान रूप से महत्वपूर्ण था।<sup>1</sup>

### **समेकित औषध परंपरा की वैज्ञानिक विरासत (Legacy of Integrated Pharmaceutical Science):**

मध्यकालीन काल का यह औषध विज्ञान आज की आधुनिक AYUSH प्रणाली की जड़ है।

- औषधीय पौधों का वैज्ञानिक वर्गीकरण
- दवाओं का मानकीकरण (standardization)
- व्यक्तिगत चिकित्सा (personalized therapy)
- औषध निर्माण की नियंत्रित तकनीकें

इन सबकी नींव इसी काल में पड़ी। इस काल ने यह सिद्ध किया कि भारतीय चिकित्सा परंपरा अनुभव और प्रयोग दोनों में समान रूप से प्रगतिशील थी। मध्यकालीन चिकित्सक औषध निर्माण में नैतिक आचार का पालन करते थे। औषधियों का शोधन (Purification) आवश्यक माना जाता था। अपवित्र या दूषित औषधि को “विष” के समान माना जाता था तथा रोगी की प्रकृति, आयु, ऋतु और आहार को ध्यान में रखकर दवा दी जाती थी। वैद्य और हकीम दोनों “दैवी कृपा” और “मानवीय सेवा” को चिकित्सा का अंतिम उद्देश्य मानते थे।

### **उपसंहार (Conclusion):**

मध्यकालीन भारत वह काल था जब चिकित्सा, दर्शन और संस्कृति एक दूसरे के साथ गहराई से जुड़ गए थे। इस युग में आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा केवल समानांतर परंपराएँ नहीं थीं, बल्कि एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित और समृद्ध कर रही थीं।<sup>8,9,10</sup> आयुर्वेद का जीवन-दर्शन, जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन को स्वास्थ्य का आधार मानता है, यूनानी चिकित्सा के मिज़ाज और चार रस सिद्धांत के साथ एक अद्भुत सामंजस्य में जुड़ गया।<sup>8,9</sup> इस बौद्धिक और सांस्कृतिक संवाद ने भारतीय चिकित्सा को नई वैज्ञानिक दृष्टि और व्यावहारिक विस्तार प्रदान किया।<sup>10,11</sup> मुगल काल इस समन्वय का स्वर्ण युग था। वैद्य और हकीमों के सहयोग से औषध निर्माण, रोग निदान और उपचार की पद्धतियाँ अत्यंत विकसित हो गईं।<sup>10,13</sup> “बाग-ए-दवाखाना”, “दार-उश-शिफा” और “अतरशाल” जैसे संस्थान इस ज्ञान के केंद्र बन गए, जहाँ भारतीय और फारसी औषधीय पौधों पर प्रयोग किए जाते थे।<sup>13</sup> इन संस्थानों ने औषध विज्ञान को अनुभव पर आधारित पारंपरिक कला से वैज्ञानिक प्रयोग और अनुसंधान की दिशा में अग्रसर किया।<sup>10, 13</sup> वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में भी यह एकीकरण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारतीय पौधों जैसे नीम, गिलोय, तुलसी और गुग्गुलु को यूनानी नुस्खों में शामिल किया गया, वहीं यूनानी पौधों जैसे इसबगोल, कसनी, अफीम और जुफ़ा को भारतीय औषध परंपरा में स्थान मिला।<sup>10,11,12</sup> इस औषधीय आदान-प्रदान ने न केवल चिकित्सा विज्ञान को समृद्ध किया, बल्कि व्यापार, कृषि और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया।<sup>12</sup> इस समेकन की सबसे सुंदर बात यह थी कि इसमें चिकित्सा को धर्म, भाषा या समुदाय की सीमाओं में नहीं बाँधा गया। आयुर्वेद और यूनानी दोनों का अंतिम उद्देश्य रोगी की सेवा, स्वास्थ्य और कल्याण था।<sup>8,9,14</sup> ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में जब पश्चिमी चिकित्सा भारत में फैलने लगी, तब भी यह समन्वित परंपरा अपनी जड़ों में दृढ़ बनी रही।<sup>10,12</sup> आज की AYUSH प्रणाली जिसमें आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा को समान महत्व दिया गया है, उसी ऐतिहासिक संवाद की जीवित विरासत है।<sup>10,11</sup> अतः कहा जा सकता है कि मध्यकालीन भारत में आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा का समन्वय केवल दो प्रणालियों का मेल नहीं था, बल्कि यह ज्ञान, अनुभव और संस्कृति का गहरा संगम था, जिसने भारतीय चिकित्सा को “समग्रता” (Holism) की दृष्टि प्रदान की।<sup>8,10,11,14</sup> यह परंपरा आज भी इस तथ्य का प्रमाण है कि जब विभिन्न विचारधाराएँ और संस्कृतियाँ सहयोग करती हैं, तो वे न केवल चिकित्सा को, बल्कि संपूर्ण मानवता को नई दिशा देती हैं।<sup>11,14</sup>

#### संदर्भ:

1. हरीश चंद शर्मा मध्यकालीन भारत, भाग 01, हिंदी मध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, pg no. 388.
2. [https://www.muhs.ac.in/upload/syllabus/MDMS/Ayurved\\_Siddhant.pdf](https://www.muhs.ac.in/upload/syllabus/MDMS/Ayurved_Siddhant.pdf).

3. <https://ayush.delhi.gov.in/ayush/unani#:~:text=In%20Unani%20system%20of%20medicine,of%20health%20than%20to%20cure.>
4. Britannica, The Information Architects of Encyclopaedia. "Unani medicine". Encyclopedia Britannica, 26 Feb. 2024, <https://www.britannica.com/facts/Unani-medicine>. Accessed 27 February 2024
5. Jabin F. A guiding tool in Unani Tibb for maintenance and preservation of health: a review study. *Afr J Tradit Complement Altern Med*, 2011;8(5 Suppl):140-3. doi: 10.4314/ajtcam.v8i5S.7. Epub 2011 Jul 3. PMID: 22754067; PMCID: PMC3252723.
6. Yasir Khan, "Unani-The Science of Holistic Healing". *AIJR Preprints*, 437, Version 1, 2023.
7. Heinrich M, Barnes J, Gibbons S, Williamson E. *Fundamentals of Pharmacognosy and Phytopharmacy*. Edinburgh: Churchill Livingstone; 2004.
8. Sharma, P. V. (2003). *History of Medicine in India*. Indian National Science Academy.
9. Ibn Sina (1025). *Al-Qanun fi al-Tibb (Canon of Medicine)*.
10. Roy, K. (2010). *Medicine and Healing in Medieval India*. Oxford University Press
11. Ansari, A. A. (2007). *Unani Medicine in India: Tradition and Transition*. CCRUM.
12. Habib, I. (1999). *Technology in Medieval India (650–1750)*. ICHR.
13. Alvi, S. (2014). *Medical Knowledge and Healing Practices in Mughal India*. *Journal of Indian History*.
14. Zysk, K. G. (2001). *Asceticism and Healing in Ancient India*. Motilal Banarsidass.
15. V. Narayanaswamy (1981). *Ancient Science of Life*, Vol. I, No.1,